लोकान्तरसुखं पुण्यं तपोदानसमुद्भवम् ।

सन्ततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे ।।69।।

अन्वय तपोदानसमुद्भवं पुण्यं लोकान्तरसुखं (भवति), शुद्धवंश्या सन्ततिः हि परत्र इह च लोके शर्मणे (भवति)।

अनुवाद जो पुण्य तप अथवा दान से उत्पन्न होता है वह केवल परलोक में ही सुख देता है। परन्तु शुद्धवंश में उत्पन्न पुत्र (सन्तान) तो इस लोक में तथा परलोक में भी सुख पहुँचाता है।

टिप्पणियाँ

तपोदानसमुद्भवम् तपश्च दानं च इति तपोदाने (द्वन्द्व समास) समुद्भवति अस्मात् इति समुद्भवः (कारण), सम्उत् धातु भू अप्। तपोदाने समुद्भवो यस्य तत् तपोदानसमुद्भवम् (बहुव्रीहि), 'पुण्य' का विशेषण। तप और दान से जो उत्पन्न होता है ऐसा पुण्य।

शुद्धवंश्या शुद्धश्चासौ वंशश्च इति शुद्धवंशः (कर्मधारय), शुद्धवंशे भवा इति शुद्धवंश्या। शुद्ध वंश में उत्पन्न होने वाली 'सन्तति' का विशेषण। दूसरी पंक्ति का अन्वय ध्यानपूर्वक देखिए, 'शुद्धवंश्या सन्ततिः हि परत्र इह च (लोके) शर्मणे भवति'।

परत्र परलोक में, इह च और इस भूलोक में भी।

विशेष इस संसार में मनुष्य तप-दान आदि के द्वारा जो पुण्य का उपार्जन करता है उससे उसे परलोक में स्वर्ग आदि की प्राप्ति होती है। परन्तु योग्य पुत्र से उसे इस लोक में (बुढ़ापे में पिता की सेवा करना आदि) तो सुख मिलता ही है परन्तु परलोक में भी पुत्र

द्वारा अर्पित किए हुए पिण्डदान तथा स्वधा के मिलने से उसे सुख प्राप्त होता है। इसलिए कहा गया है कि शुद्धवंश की सन्तान पिता को इहलोक तथा परलोक दोनों में सुख देती है।

शर्मणे शर्मन् शब्द का चतुर्थी विभक्ति में एकवचन, सुख के लिए। 'क्लृपि सम्पद्यमाने च' से चतुर्थी विभक्ति।